मासिक

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 10	मंगलवार 10 मई, 1983	संख्या 1

सत्संग हजूर परम सन्त परम दयाल पण्डित फकीर चन्द जी महाराज

इटारसी 6-3-75

मैं जब कभी हनुमकुण्डे आता हूँ तो यहाँ इटारसी आया करता हूँ। जब स्टेशन पर आता हूँ तो खबर नहीं कितने ही सैकड़ों आदमी मुझे वहाँ स्टेशन पर घेर लेते है और पागल कर देते हैं। अब यहाँ सत्संग तुम ने रखा, बताओ कितने आदमी आये ? इसके अतिरिक्त जहाँ भी कहीं जाता हूँ, लोग कोई दुनिया के झगड़े, कोई मकान, कोई लड़के की शादी, कोई पोता-पोती, कोई ग़रीबी, कोई कुछ, कोई कुछ। वे उम्मीद करते हैं कि मैं उनको यह चीज़ें दूँ। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ क्यों फ़कीर चन्द ! यह

गुरु बन गया तू बुड्ढे ! क्या मैं या कोई गुरू किसी को कुछ दे सकता है ? यह एक सवाल है।

जुगिन्द्र सिंह ! तुमको कहता हूँ। तुम्हारी ही वजह से यह सत्संग का यहाँ सारा इन्तज़ाम हुआ, तुम ही पहली दफ़ा मेरे पास होशियारपुर गये थे। यह काम मैं क्यों करता हूँ ? मैंने यह गुरूआई मान के लिए नहीं की, इज्ज़त के लिए नहीं की, धन के लिए नहीं की। मेरे अन्दर में छोटी उमर से कोई तलाश थी, आद घर की समझ लो, मालिक को मिलने की समझ लो, शान्ति की समझ लो, निर्वाण की समझ लो, मुक्ति की समझ लो, भक्ति की समझ लो, ज्ञान की समझ लो, कुछ समझ लो, एक तलाश थी। मैं तो साधारण हिन्दू आदमी था, राम, भगवान्, कृष्ण, देवी, देवता को मानने वाला था, क़िस्मत मेरी मुझे दाता दयाल के चरणों में ले गई जहाँ से मुझे यह सन्तमत, राधास्वामीमत या कबीरमत मिल गया और यह काम दाता ने जो मुझको दिया था यह उस मेरे जो असली चीज़ मैं चाहता था उसको हासिल करने के लिए दिया था

कि वह चीज़ मुझे मिल जाय। उस सिलसिले में मुझे यह काम करना पड़ा। अब तुम लोग आते हो, दूसरे भी अपने गुरुओं के पास जाते हैं, मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या मैं या कोई और गुरु किसी को बेटा दे सकता है? किसी की बीमारी दूर कर सकता है? किसी को धन दे सकता है? यह एक सवाल है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूँ।

मैं कहता हूँ हाँ और नहीं। हाँ इसलिए कहता हूँ कि जिनके भाग्य में होता है उनको विश्वास आ जाता है और उनके विश्वास से उनको वह चीज़ मिलती है। यह मेरा तजुर्बा है। कोई चीज़ किसी के भाग्य में होती है तो वह मेरे पास आ जाता है (या दूसरे महात्मा के पास तो मैं कुछ कह नहीं सकता, मैं अपना तजुर्बा बयान करता हूँ) तो अगर कुछ मैं कह देता हूँ, दूसरा आदमी उस पर विश्वास कर जाता है तब उसको वह चीज़ मिल जाती है। अगर कोई विश्वास नहीं करता तो कुछ नहीं मिलेगा। यह है बिल्कुल सच्चाई।

सन्त भी वहाँ बोलता है जहाँ होने वाली बात होती है ! यहाँ मेरे पास श्री वेंकटैय्या करीम नगर से आये हुए हैं, यह करोड़पति है, मिलें Mills हैं, दस-पन्द्रह लाख की ज़मीन है अपनी, चार भाई हैं; धन्धा करते हैं। यह कुछ वर्ष पहले जब दाता दयाल, मेरे गुरु महाराज का वक़्त था तो छाबड़ी लगाया करता था, छाबड़ी ! चीज़ें खाने पीने की बेचने के लिए छाबड़ी लगा के एक जगह बैठा हुआ था। दाता दयाल और नन्दू भाई वहाँ से पैदल जा रहे थे। इसने सुना हुआ था कि दाता दयाल सन्त हैं। तो यह उठ के हाथ बाँध के, इसने अपना कपड़ा उतारा और बिछा दिया। वह बैठ गये। उन्होंने चार आने की इस से कोई चीज़ ली, आप खाई, बाँटी। कहने लगा महाराज ! ग़रीब हूँ, चार भाई हैं, खाने को नहीं मिलता है, क्या करूँ ? दाता दयाल ने एक रुपया इसको हैदराबादी सिक्के का भाई नन्दू सिंह से लेके दिया कि इसको अपने पास रखो, नज़र मारो जहाँ तक तुम्हारी नज़र जाती है। उस वक़्त हर जगह इतनी आबादी नहीं थी। इसने नज़र मारी। कहने लगे जितनी जगह

पर तुमने नज़र मारी है यह सब तुम्हारी हो जायेगी और आज यह उस सब जगह का मालिक है। अब मैं सोचता हूँ कि अगर दाता दयाल ने इसको दिया, किसी और को क्यों न दे गये ? इसने उनके इस वचन कहने से पहले कौनसी उनकी सेवा की थी ? बात समझ में आती है ? उस वक़्त जब उन्होंने कहा, भई ! नज़र मारो यह जगह तुम्हारी हो जायेगी, उस से पहले तो न यह उन से मिला, न इसने कोई सेवा की ! नहीं समझ में आती है !! तो मेरा अपनी ज़िन्दगी का तजुर्बा और सन्तों का यह है कि सन्त भी वहाँ बोलता है जहाँ कोई चीज़ किसी के भाग्य में होती है। समझ गये मेरी बात को ? यह मैं क्यों कहता हूँ ? मैंने प्रण किया था कि जो कुछ मुझको सन्तमत से मिलेगा मैं वही अनुभव कह जाऊंगा, यह मेरा अपना कर्मभोग है इस वास्ते मैं यह काम करता हूँ। दाता ने कहा था कि चोला छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना, तो मेरी समझ में आया है कि जो बात होनी होती है, किसी के भाग्य में होती है सन्त भी वहाँ बोलता है।

कई सन्त मेरे जैसे पाखण्डी, दुनिया की इज़्ज़त और मान के चाहने वाले, दूसरे को खुश करने के लिए यूँ ही आशीर्वाद दे देते हैं। देते है कि नहीं देते ! तुम्हारे दरवाज़े पर कई साधु मांगने वाले आते हैं, आते हैं कि नहीं आते ! कोई कहता है तेरा पुत्र ठीक रहे, तेरा यह ठीक रहे. वग़ैर मांगे हुए आशीर्वादें देते रहते हैं। ये सन्त नहीं हैं, ना ! तो मैं यह सोचता हूँ, फ़कीर चन्द ! तूने यह मकड़ी का जाला बनाया, क्या किया ! तुम लोग, दुनिया मुझ से दुनिया मांगती है, यह ठीक है। याद रख लेना तुम्हारे कर्म को जो तुमने किया हुआ है उसको कोई बदल नहीं सकता।

शाह काकू पाकिस्तान में एक फ़कीर हुआ है, पीछे से उसका नाम हो गया कालाशाह काकू। वह अच्छा पहुँचा हुआ फ़कीर था। उसके पास कंजरियाँ मुज़रा करने आया करती थीं। तो एक दफ़ा एक कंजरी आई, अच्छी धनी थी, उसने मारफ़त की ग़ज़ल गाई वह फ़कीर बड़ा खुश हुआ। कहता है मांग क्या मांगती है ? उसने कहा साईं ! तेरा दिया

हुआ बहुत कुछ है। नहीं! मांग क्या मांगती है। उस ने कहा अच्छा! अगर मेरी क़िस्मत में दो रोटी है तो या एक कर दे या तीन कर दे। उस कंजरी ने उस शाह काकू को बोला कि अगर देना चाहता है, अगर मेरी क़िस्मत में दो रोटी है तो या एक कर दे या तीन कर दे। उस शाह काकू की आँख खुल गई। उसके बाद वह दस वर्ष जीया, मुँह काला करके जीया, स्याही मल लेता था। कहता था :-

खुदा का हुक्म वाला,
शाह काकू का मुंह काला।

इसलिए मैं कहता हूँ, ऐ भोलेभाले इन्सान! तू दुनिया की चीज़ों के लिए, दुनिया की चीज़ों के लिए, दुनिया की आशाओं के लिए मन्दिरों में जा के प्रार्थना करता है, मस्जिद में जा के प्रार्थना करता हैं, गुरुओं के पास जाता है, तुम को जो कुछ मिलना है तेरे अपने कर्म किये हुए, तेरे अपने विश्वास, तेरी अपनी श्रद्धा का फल मिलना है। किसी महात्मा ने, किसी गुरु ने तुमको कुछ नहीं देना। अब यह जुगिन्द्र सिंह

बीमार है। मेरा बड़ा प्रेमी है, सेवा करता है। जब मैं आता हूँ सौ रुपया मुझे अपने पास से देता है, जो संगत की तरफ से देता है वह अलहदा रहा। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ ओ बुढ्ढे! अगर तू कुछ कर सकता है तो इसकी बीमारी दूर कर दे! कैसे कर सकता हूँ! अच्छा! मैं न सही, अगर यह सन्त खुद बीमार हुए, जो सन्त अपनी बीमारी का इलाज नहीं कर सकता तुम्हारी बीमारी का इलाज कहाँ करेगा। बाबा सावन सिंह जी का बीमारी से क्या हाल हुआ? स्वामी रामकृष्ण परमहंस का क्या हाल हुआ?

यसू मसीह जिस को फाँसी पर चढ़ा दिया गया, और कीलें ठोकी गईं, उस की बाबत कहा गया है कि कोढ़ी उसके साथ लग जाते, राज़ी हो जाते, यह जो कुछ भी है यह सब ऐ इन्सान! हर एक आदमी का अपना कर्म है। ऐ भोलेभाले गृहस्थियो! तुम दुनिया की आशाओं में फँस कर इन मन्दिरों, इन मस्जिदों, इन गुरुओं के पास जाकर दुनिया की चीज़ें मांगते हो! कोई तुमको कुछ नहीं दे सकता, अगर तुमने लेना है तो अपने कर्म से लेना है।

मिल सकता है तुमको ! तुम्हारे अपने कर्म से मिल सकता है। तुम्हारे अपने विश्वास से मिल सकता है, उस मिलने का मैं तुमको तरीक़ा बता देता हूँ और वह तरीक़ा मुझको तुम लोगों से समझ में आया है।

वह क्या है ? मेरे पास चिट्ठियें आती हैं और कई मिलते है, वे कहते हैं बाबा जी, हमको फलॉ चीज़ की ज़रूरत थी, हम आपका ध्यान करते थे, हम को वह चीज़ मिल गई या आपने हमें कह दिया, हमारा काम पूरा हो गना। यह कहते हैं। अभी मैं एक जगह से आया हूँ, एक औरत मेरे पास आई, उसके एक बच्चा उसे मेरी गोद में रख दिया। मैंने कहा क्या है भाई ? कहने लगी बाबा जी ! 12, 15 साल से मेरे औलाद नहीं थी। मैं आपकी "मनुष्य बनो" पत्रिका पढ़ती थी। उससे मुझको विश्वास बैठ गया। मैं आपका यहाँ ध्यान करने लगी। रोज़ ध्यान करती और मैं मांगती थी कि मेरे लड़का हो जाये, यह लड़का हो गया। इस में राज़ क्या है, मैं राज़ बताये देना चाहता हूँ तुमको।

राज़ यह है कि इस दुनिया में जो कुछ तुमको, हमको मिलता है यह हमारे ख़्याल, हमारे अमल, हमारी वासना का फल मिलता है, हमारी इच्छा का फल मिलता है। नहीं बात समझ में आती है! यह जो जगह है इन्सान की (सहस्रदलकमल और त्रिकुटी का स्थान), जिस तरह वायरलैस में, वायरलैस जानते हो नां! वहां बाहर तार तो होती नहीं, बिजली जाती है या आवाज़ जाती है नां, तुम्हारा इन्दौर बोलता है, सब जगह जाता है। क्यों जाता है? इतनी बिजली कहाँ से आती है जो सारे ब्रह्माण्ड में फैल जाय? वायरलैस में या रेडियो के असूल में दो Coil होते हैं, Coil। एक Coil के ऊपर दूसरा लगा हुआ होता है। निचले Coil को Priliminary Coil कहते हैं, ऊपर के Coil को Secondary Coil कहते है। अगर इसमें सौ चक्कर है, तो ऊपर के Coil में अगर हज़ार चक्कर हैं तो अगर 10 बोल्ट बिजली इसमें से गुज़ारोगे तो उसके चक्करें के हिसाब से वह 100 बोल्ट बनके आसमान पर जायेगी, यह साईंस का असूल है। इसी तरह

से जो आदमी अपनी वासना को इन स्थानों पर अपने इष्ट का ध्यान करके (तुम राम को पूजते हो राम का ध्यान करके, कृष्ण को पूजते हो कृष्ण का ध्यान करके, देवी को पूजते हो देवी का ध्यान करके. जिसको भी तुम पूजते हो) इस जगह उस अपने इष्ट की मूर्ति का ध्यान करके.वह जो चीज़ तुम चाहते हो, अपने सच्चे दिल से यहाँ बैठ कर मांगा करो, वह तुम्हारी आशा जल्दी पूर्ण होने की उम्मीद हो सकती है। बस यह गुर है।

कोई महात्मा ने या किसी दूसरे ने तुमको नहीं देना! तुमको जो कुछ मिलना है तुम्हारी अपनी ही वासना का फल मिलना है। अपनी वासना को तेज़ करने के लिए, बढ़ाने के लिए अपने अन्तर में दाख़िल होकर, यहाँ सहस्रदलकमल के स्थान पर बैठकर, वह वासना करो, तुमको वह चीज़ जल्दी प्राप्त हो जायेगी। यह मेरा ज़िन्दगी का तजुर्बा है। कुछ तो मैंने भी अपनी जिन्दगी में आज़माया, मुझे कभी कोई किसी चीज़ की ज़रूरत होती है, क़ुदरत अपने आप ही पैदा कर देती है, मेरे मिलने वाले

हैरान होते हैं, बाबा जी ! यह क्या हो गया !! तो यह क्यों होता है ? जो आदमी यहाँ ध्यान करके अपनी वासना को रखते हैं (मगर अगर बुरी वासना रखोगे बुरा होगा) इसीवास्ते मैं दुनिया को नाम नहीं देता। क्यों ? दुनिया अपनी वासना को ठीक नहीं करती। अगर तुम यहाँ ध्यान करते हो, तुम्हारे मन के अन्तर सास को बहु से दुश्मनी है, बहू को सास से दुश्मनी है, औरत को पति से दुश्मनी है, पति को औरत से दुश्मनी है, भाई को भाई से दुश्मनी है, वह जो तुम्हारी दुश्मनी व द्वेष का जज़बा तुम्हारे अन्तर है वह बढ़ जायेगा और तुम्हारा नुक्सान हो जायेगा वजाय फ़ायदे के, अगर नाम जपने वाले की वासना ठीक नहीं है।

मेरे ख़्याल में मैं बोल रहा हूँ, आप लोग मेरी बात को सुनो तब तो फ़ायदा है, नहीं तो मेरे चिल्लाने की क्या ज़रूरत ? मैं वह राज़ तुम लोगों को बताये जाता हूँ कि तुम्हारी ज़िन्दगियाँ बन जायें। मगर तुम मेरी बात को तो सुनते नहीं !

मुझे जफ़्फा मारने से तुम्हारा कल्याण नहीं होगा ! गुरु-गुरु करने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा !! गुरु की बात को सुनकर उस पर अमल करने से तुम्हारा बेड़ा पार होगा। मैं इन गुरुओं में से नहीं हूँ जो तुमको ठगने के लिए आता है। धोखेबाज़ नहीं हूँ, मैं मक्कार नहीं हूँ। मैंने यह पता नहीं क्यों काम किया ! दाता ने कहा था फ़कीर ! चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना, मैंने जो अनुभव किया वह कहता हूँ। क्यों मैं कहता हूँ ? अफ़्रीका से, अमेरिका से ऐसे - ऐसे केस मेरे पास आते है जहॉ जिस-जिस की कोई मुसीबत होती है, वह लिखता है बाबा ! तेरा ध्यान हमने किया, हमारा काम यह हो गया। अब मैं सोचता हूँ कि मैं तो गया नहीं, न मैं वहाँ गया, न मैं उन आदमियों को जानता हूँ, वह काम उनका किसने किया ? उसका काम उसके साधन ने किया, उसकी वासना ने किया। जैसी आसा वैसी बासा, जैसी मति वैसी गति, जैसी करनी वैसी भरनी। इस वास्ते मैं डर गया हूँ, मैं दुनिया को नाम नहीं देता, सिर्फ़ सत्संग कराता हूँ। क्यों ? कि अगर सत्संग नहीं हुआ, तो हमारी वासना ग़लत

होगी। हम दिल में द्वेष रखेंगे, बुरज़ रखेंगे। जब हम अभ्यास करेंगे वह जो हमारे दिल में बुग्ज़ की चाह् है वह बढ़ जायेगी। जिस के विरुद्ध तुम दुश्मनी करते हो उसका भी नुक्सान होगा और तुम्हारा भी नुक्सान होगा। यह है राज़ जो मैं देना चाहता हूँ। मगर तुम लोग उसको तो लेते नहीं, अज्ञान की भक्ति करते हो, मेरी जान भी खाते हो, अपना वक़्त भी गँवाते हो।

दुनिया की चीज़ें या परमार्थ को हासिल करने के लिए किस चीज़ की ज़रूरत है? अपनी वासना ठीक करो। ज़ो कुछ चाहते हो उसकी इच्छा रखो, चाह रखो और अपने अन्तर में ध्यान करो। मैं नहीं कहता तुम मेरा ध्यान करो। जहाँ तुम्हारा विश्वास बैठता है उसको पूर्ण मान के वहाँ ध्यान करो, तुम्हारी दुनिया की चीज़ें अगर तुम्हारा ध्यान बैठ जाये तो वह पूरी होती रहती हैं।

मैं तुमको क्यों कहता हूँ? यह ग्रोवर बैठा हुआ है,। मामचन्द गुज़र गया, उसकी जगह पर यह

काम करते हैं। रेलवे का यह गार्ड है। इसने मुझे कई घटनाएँ सुनाईं एक घटना यह सुनाई। कि यह सवारी गाड़ी में ब्रेक में बैठा हुआ था। लड़कों ने तारें खींचनी शुरू कीं, वे गाड़ी रोक रहे थे। इसने मना किया, वे इसको मारने के लिए दौड़े। यह ब्रेक में आ गया। कहता है, बाबा! मैं दुःखी हुआ, तुमको याद किया। मैं आ गया, ब्रेक में इसके सामने मैं प्रकट हो गया और मैंने इसको कहा, ऐसे नहीं ऐसे करो तुम्हारा काम हो जायेगा, यह गाड़ी चली जायेगी। अब इसने तो मुझे कह दिया! अब मैं ब्राह्मण हूँ, फ़कीर हूँ, क्या अपनी आत्मा से पूछने के लिए तैयार नहीं हूँ कि क्या तू गया था? नांह! तभी तो मैं तुम लोगों को कहता हूँ कि आजकल के गुरुओं, साधुओं और महात्माओं ने हम गृहस्थियों को बेवकूफ़ बनाया और हम लोगों को बेवकूफ बनाकर लूटा है, लूटा! मैं तो गया नहीं, अब वह कौन गया? चूँकि यह विश्वासी था, इसको मुसीबत आई, इसके दिमाग़ के अन्तर सुरत ख़ुद-ब-ख़ुद चढ़ गई। मेरा ध्यान किया, मेरा रूप प्रकट हो गया और जो इसकी मनोकामना थी वह पूर्ण हो

गई । तुमको मैं सबूत दे रहा हूँ।

इस वास्ते ऐ बेटियो! बजाय इसके कि तुम दुनिया की इन आशाओं के लिए गुरुओं के पास यैं, यैं, यैं, यैं करते (गिड़गिड़ाते) फिरो, गुरु से गुर ले लो। मैं गुरु की महिमा जानता हूँ। गुरु गुर देता है, ज्ञान देता है, राज़ देता है, भेद देता है। वह यह भेद मैं तुमको बता रहा हूँ कि जो कुछ भी तुमको चाहिए, आशा है, उसके लिए आशा दिल में रखकर यहाँ अपनी वृत्तियों को जमा कर ध्यान किया करो और उसकी आस रखा करो। यह ठीक है कि अगर तुम यह आस रखो कि तुम बादशाह बन जाओ, हो सकता है, मगर उसके लिए समय लगेगा। इस जन्म में मुमकिन है तुम्हारी वासना पूरी न हो, दूसरे जन्म में तुम बादशाह बन जाओ। यह नहीं कि वह चीज़ पूरी नहीं होगी, तुम्हारी आशा अवश्य पूरी होगी, जो कुछ मांगते हो वह ज़रूर मिलेगा। इस जन्म में अगर बहुत लम्बी चौड़ी आशा है तो इस जन्म में नहीं मिलेगी तो अगले जन्म में मिलेगी। ज़रूर मिलेगी! क्योंकि

यह क़ुदरत का क़ानून है और यह नियम है। मैंने क्या कहा!

तो मैं जहाँ जाता हूँ, तुम लोग मुझे गाड़ी में घेर लेते हो, तुमको बताये चला हूँ कि बजाय मुझे जप्फो मारने के, जो कुछ तुम चाहते हो, यहाँ अपने इष्ट का रूप बनाकर, अकेले बैठकर, आँखें बन्द करके अपने अन्तर में यहाँ वासना किया करो यहाँ, यह मुक़ाम है जिसको सहस्रदलकमल बोलते हैं, तुम्हारी दुनिया की आशाएँ बहुत कुछ पूरी हो जायेंगी। मगर यदि तुम दूसरों के लिए चाहते हो तो हो सकता है पूरी न हो, अपने लिए हो सकती है। क्यों? दूसरा नहीं चाहता। तुम समझते हो नां। मेरे पास कई आये, बाबा जी! मेरे पुत्र का यह काम हो जाये। वह लड़का तो वह वासना चाहता नहीं, मां चाहती है, उसके लिए क्या होगा? हो सकता है अगर मां की कुव्वत-ए-इरादी ज़बर्दस्त है तो यह हो जाये। यह एक बात!

पिछले ज़माने में गुरु लोग, पुरोहित लोग हितैषी

होते थे। हितैषी जानते हो नां! अपने जजमानों का हित करते थे। उनका यह फ़र्ज़ होता था कि गृहस्थियों के जो दुःख होते थे, उनमें तो ताक़त थी नहीं अपने अन्तर अभ्यास करने की, तो वह पण्डित लोग या महात्मा व गुरु लोग उनको बजाय अपने अन्तर में ध्यान करके उनका भला चाहते थे। बात मेरी समझ में आती है कि नहीं आती? उनका भला चाहते थे, तो उनकी ताक़त से उनको फ़ायदा पहुँच जाता था। मगर यह बात तुम मुझ से कैसे उम्मीद कर सकते हो? एक आदमी हो तो उसके लिए करो, एक गुरु ने बीस हज़ार चेले बनाये हुए हैं, किस किस के भले के लिए सोचो! तो यह तो है दुनिया की बात।

अब रह गया सवाल कि जो काम मैं करना चाहता था, जो ड्यूटी मेरे ज़िम्मे है वह तुमको तो ज़रूरत नहीं, उनको ज़वाब देता हूँ जो सुबह मुझे कई औरतें यह कहती थीं कि अन्तर में हमारा अभ्यास नहीं बनता। ऊपर का अभ्यास नहीं बनेगा जब तक उसके अभ्यास की शर्तें पूरी नहीं होंगी।

जो परमार्थ चाहते हैं, शान्ति चाहते हैं, इस संसार या आवागमन से बचना चाहते हैं, अपने घर जाना चाहते हैं, उन के लिए है कि कौन जा सकते हैं वहाँ, उनके लिए स्वामी जी की वाणी है :—

कोमलचित्त दया मन धारो, परमारथ का खोज लगाना।

अब तुम सोचो, यह शर्त है। जब तक किसी का कोमलचित्त नहीं और उसके दिल में दया का भाव नहीं है वह चाहे फ़क़ीर चन्द का चेला बन जाय, चाहे किसी और महापुरुष का उसको कुछ नहीं मिलेगा जब तक यह शर्त पूरी न हो। कोमल-चित्त किसे कहते हैं ? यह वृक्ष है, इसके जो अगले पत्ते हैं वे नर्म हैं। उनमें क्या है ? अकड़ नहीं है, जिधर चाहो मुड़ जाते हैं। तो जिसके मन में किसी बात का अहंकार नहीं है सिर्फ़ वह आदमी कोमलचित्त बन सकता है। जिस आदमी में किसी क़िस्म का अहंकार नहीं है अहंकार ! तुमको मैंने वेंकटैय्या को उदाहरण दी कि नहीं, अब बैठा हुआ है अन्दर, करोड़पति है, कोई अहंकार देखा उसमें ? कोई धन

का अहंकार है ? तुम्हारे सामने मैं एक ज़िन्दा उदाहरण बता रहा हूँ। 72000 रुपये की अभी इसने वहाँ अस्पताल के पास एक सराय बनाई है, उसका उद्घाटन मैं करके गवर्नमेण्ट को देके आया हूँ। तुम देखो, इसकी शक्ल को देखके कोई कह सकता है। इसमें कोई अहंकार है ? तो जिसके चित्त में अहंकार नहीं है उसका मन कोमलचित्त हो सकता है और किसी का नहीं हो सकता। तुम में जवानी बड़ी है, ताक़त बहुत है, तुमको अपनी ताक़त का अहंकार है जब तक तुमको अपनी ताक़त का घमण्ड है तुम कोमलचित्त नहीं हो सकते। जब तक तुमको अपनी दौलत का अहंकार है तुम कोमलचित्त नहीं हो सकते। जब तक तुमको किसी बड़ी अपनी पदवी का जिस पर हो, अहंकार है, तुम कोमलचित्त नहीं बन सकते। इसलिए जब तक कोई आदमी तमाम क़िस्म के अहंकारों से रहित न हो, उसका साधन और भजन बन ही नहीं सकता भावें कोई जो मर्ज़ी करे, लोगों को जितना मर्ज़ी चाहे उपदेश करता फिरे, मैं झूठ नहीं बोलता। दूसरी चीज़ है दया :—

ये दो चीज़ें हों तो फिर परमार्थ की तरफ़ तुम आगे चल सकते हो, तलाश कर सकते हो कि परमार्थ क्या है और कैसे पहुँच सकते हो ।

अब दया का हिसाब देखो ! तुम अपनी ज़िन्दगी को देखो, तुम्हारे बच्चे हैं छोटे-२, ये ग़लती खाते हैं, तुम इनको मारती हो कि नहीं मारती ? बाप बच्चों को मारता है कि नहीं मारता ! वे तो बेचारे मासूम हैं, उनको तो समझ नहीं ! तुम में तो इतनी भी दया नहीं, जानते भी हो कि इसको इतनी बुद्धि नहीं है, तुम उसको मारते हो, कूटते हो तो फिर यह उम्मीद करते हो कि तुम्हारा अभ्यास बन जायेगा, तुमको परमार्थ मिल जायेगा, सब बकवास है, सब झूठ है ! अमली ज़िन्दगी में कोई नहीं आता । एक ! यह तो बच्चों का हाल है ।

तुम्हारी सास तुमको ताना मारती है, स्त्री पति को ताना मारती है, पति स्त्री को ताना मारता है । अगर बश में हो तो शायद थप्पड़ भी मार देवे या

जान से मार देवे, डर का मारा क़ानून से वह बेशक कुछ न कहे मगर उसके दिल में गुस्सा और बदला लेने का भाव तो पैदा होता है कि नहीं आदमी में होता ? तो जब तक किसी के अन्दर से बदला लेने का भाव नहीं जाता, उसको परमार्थ नहीं मिल सकता। यह मैं साफ़ बयान इसलिए कर रहा हूँ कि वे सत्संगी जिनको पैंतीस-पैंतीस साल हो गये उनको यह शिकायत है कि हमारा परमार्थ नहीं बना, उनको कहना चाहता हूँ, तुम्हारा परमार्थ क्यों नहीं बना। क्यों, अव्वल तो तुम्हारा कोमलचित्त नहीं। तो फिर क्या होना चाहिए ? इन्सान के अन्तर किसी दूसरे आदमी से, रिश्तेदार से, भाई से, बिरादरी से बदला लेने का भाव ना हो और किसी क़िस्म का अहंकार ना हो। जब तक ये दो चीज़ें किसी सत्संगी के अन्तर में अमली पहलू से नहीं आतीं वह परमार्थ को हासिल नहीं कर सकता, नहीं कर सकता, नहीं कर सकता, चाहे बेशक तुम, ख़ुदा मियां के चेले बन जाओ तुम। हाँ! एक हो सकता है। यदि तुमको सत्संग किसी कामिल इन्सान का मिल जाय तो फिर उसके सत्संग से तुमको

अपने मन को निरहंकारी बनाने या दयावान् बनाने का ख़्याल मिल सकता है और तुम अपने आप को बदल सकते हो फिर तुमको परमार्थ मिल सकता है। इस वास्ते बार-बार कहा जाता हैं :—

सतगुर खोजो रो, जग में दुर्लभ रत्न यही।

अब तुम सोचो ! तुम ऐसे आदमी को गुरु बनाते हो जिसका दूसरी गद्दी वाले से झगड़ा है, मुकद्दमाबाज़ी हो रही है, गुरुओं का आपस से झगड़ा है, उन गुरुओं में बदला लेने की इच्छा मौजूद है, उनकी संगत से तुम्हारा मन कभी साफ़ नहीं हो सकता क्योंकि उनके तो स्वयं मुकद्दमाबाज़ी के झगड़े हैं। क्या कहा मैंने ! दुनिया को मालूम नहीं कि सत्संग किसका करना चाहिए, दुनिया तो ऐसी बेवकूफ़ है मेरा भूदेव, मेरी रिक्शा चलाता है। औरतें मर्द आते हैं जो मैं रिक्शा में ना होऊँ तो भूदेव को ही मत्था टेकते हैं और कोई नहीं होता तो रिक्शा को ही मत्था टेकते चलते हैं :—

फटी आँख विवेक की, गिने न सन्त असन्त।
जिसके संग दस वीस हैं, तिसका नाम महन्त ॥

अब ये मेरे साथ रहते हैं, तुम सभी कहोगे सन्त हैं। तुम समझते हो मेरी बात को मैंने क्या कहा ! इस वास्ते बार-बार कहा जाता है, किनके लिए ? जो परमार्थ चाहते हैं उनको कहता हूँ, पहले :—

सत्तगुरु खोजो री जग में, दुर्लभ रत्न यही।

सत्संग करो, जिस सत्संग में जाने से, जो परमार्थी जीव हैं उनको कहता हूँ मन को शान्ति मिलती है, तस्कीन मिलती है, उनको मन की तबदीली आती है, उसकी संगत और करो। उसकी संगत से क्या होगा ? उसने कुछ नहीं तुमको देना ! उसकी संगत से, उसकी Radiation से, उसके वचनों से तुमको अपने मन के ख़्यालात बदलने में मदद मिलेगी, हिम्मत आयेगी और आसान तरीक़ा मिलेगा।

देखो जुगिन्द्र सिंह ! मैं तुमको address करना चाहता हूँ। तुमने दुनिया देख ली !, गृहस्थ भोग लिया, बच्चे पैदा कर लिये, साहिब-ए-इज़्ज़त भी हो गया, साहिब-ए-दौलत भी हो गया, अब अगर

इस पिछली उमर में तुम अपने आप को अपने लड़कों, औरत और बच्चों के साथ मोह रखोगे, तुम अपना जन्म खराब करोगे। तुम्हारी सारी उमर की, की-कराई जो तुमने इतना यह सत्संग का झमेला किया, या वह किया वह सारे का सारा व्यर्थ जायेगा, किसी काम का नहीं होगा, यह बताता हूँ तुमको। यह शरीर है इसने एक न एक दिन तो जाना है! किसी का रहा? तो जब नहीं रहा तो इसके लिए क्यों पिटना! हाँ! इसका इलाज़ करो, जहाँ तक हो सके जो उचित तरीक़ा है उससे इसका इलाज़ ज़रूर करो मगर हाय-हाय और चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं। तैयार रहो कि एक दिन इस शरीर को त्यागना है और फिर अपना जो तुम्हारा मन है इसको फ़क़ीर चन्द के साथ मत बांधो न किसी बाहरले गुरु के साथ बांधो। उसको जो तुम्हारे गुरु ने वचन कहे हुए हैं उन वचनों से जो तुमको समझ मिली हुई है उस गुरु के ज्ञान के साथ अपने आप को बांधो, तब तुम्हारा कल्याण होगा। आजकल दुनिया में धोखा है और फ़रेब है। आजकल का Guruism चारसौबीस है, मैं निर्भय होकर कहता हूँ। हमको

कहा जाता है नाम ले लो भई ! अन्त समय में सत्तगुरु आके तुमको ले जायेगा, यह ख़्याल दिया गया है, जो मर्जी चाहे करते रहो। अब दुनिया इस ख़्याल को लेकर नाम लेती है, चारसौबीस करती है. हेराफरी करती है, न दया पालती है, न अहंकार तोड़ती है और जब अन्त समय आता है, ठीक है अन्त समय में गुरु आ जाता है। वह कौन गुरु आता है ? वह बाहर का गुरु नहीं आता ! लोग मरते हैं, तुम्हारे इटारसी में एक दो मौतें हुइं कि नहीं हुईं और उन्होंने कहा बाबा फ़क़ीर आया, एक औरत मरी, तुम्हारा नानकचन्द मरा। उसने कहा कि नहीं कहा, "बाबा आ गया, हवाई जहाज़ ले के आया, उसका नम्बर यह है। वह अपनी औरत को कहता है चल तू भी चलना है ?" अब मैं तो आया नहीं ! न मैं हवाई जहाज़ लाया। वह कौन आया ? वह जिस क़िस्म का ख़्याल उसके दिमाग़ में था वही आया। इसलिए जिनको अन्तिम समय में कोई सगुण रूप लेने आता है उनको भी दूसरा चोला मिलता है, यद्यपि वह चोला अच्छा मिलेगा। यह

मैं तुमको कह रहा हूँ और दूसरे जो बूढ़े हैं उनको कह रहा हूँ। लोग मरते हैं, कहते हैं बाबा आया। कई औरतें मरीं, कहती हैं बाबा भी आया, भण्डारो भी आई। मैं इसको पूछता हूँ तू गई थी? कहती है नहीं! मैंने कहा ज़रा बच के रहना, गुरु बनी हुई है, अगर तू इन बातों को सुनाके, औरतों से पैसा लेके खा जायेगी! तेरी जान जायेगी। तू जाती कहाँ है और मैं कहाँ जाऊंगा। इन गुरुओं का जो हाल हुआ वह मैंने तुमको बता दिया।

राधास्वामीमत के चलाने वाले राय सालिगराम साहिब अपनी 'प्रेम वाणी' में लिख गये, सत्तगुरु कौन? सत्तगुरु केवल शब्दस्वरूपी राधास्वामी दयाल, उसके चरण प्रकाश हैं। फिर एक जगह लिखते हैं, अन्त समय में फिल्म चलती है। जिन-२ से वास्ता होता है वे भी आ जाते हैं। जिस गुरु से नाम लिया उसकी शक्ल भी आ जाती है, शब्द भी सुनाई देता है, उसको भी कुछ समय के लिए ऊपर के लोकों में रहना पड़ेगा। वहाँ उसको गुरु के दर्शन

होते रहेंगे और सत्संग मिलता रहेगा गुरु का, तब फिर कोई सन्त सत्तगुरु आयेगा तो बाकी की कमाई पूरी करेगा। मैं चाहता हूँ तेरा यह आखिरी चोला हो। यह मेरी ख्वाहिश है, इस ख्याल से मैं तुमको यह भाषण दे रहा हूँ। क्यों ? मैं अपनी यह ड्यूटी समझता हूँ, तुम मानो या ना मानो इसका मैं ज़िम्मेवार नहीं ! गुरु या तो ज्ञान का रूप है या प्रकाश का रूप है या शब्द का रूप है। अच्छा, अगर यह नहीं भी आता तो जिस गुरु से तुमने नाम लिया हुआ है या जिस गुरु का ध्यान करते हो उस गुरु को यह मत समझो कि फ़क़ीर चन्द होशियारपुर का रहने वाला है या बाबा सावन सिंह ब्यास का रहने वाला है वरना तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। उस रूप को यह समझो :—

गुरुब्रह्मा गुरुर्बिष्णु: गुरुर्देवा महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

तब तुम्हारा बेड़ा पार होगा। इन गुरुओं ने,

इन मज़हबों ने और इन पन्थों ने हमको बेवकूफ़ बनाकर अपने-अपने ख्याल में बांधने की कोशिश की है। हमको आज़ाद नहीं किया, सच्चाई नहीं बयान की। अब मैं सच्चाई बयान करता हूँ, मुझे कौन भला आदमी देगा पैसे ! कोई ऐसा ही अधिकारी होगा जो मेरी ज्ञानदृष्टि से मेरी सेवा करेगा, वरना कौन देगा मुझे ! बात मैं सच्ची कहता हूँ मगर मैं अपनी ड्यूटी समझता हूँ क्योंकि मैं हूँ सन्त सत्तगुरु वक़्त, आया ही इसी वास्ते हूँ फ़क़ीर के चोले में कि जो गुरुमत का अनर्थ आया हुआ है, अज्ञान में आकर, जीवों को भ्रम में डालकर, अपने चक्कर में लाये हुए हैं इनको सच्चाई बयान कर जाऊँ कि सच्चाई गुरुमत की यह नहीं, यह है। आज शब्द निकला था :—

कोमलचित्त दया मन धारो, परमारथ की खोज लगाना
इन्द्री थान विषय को त्यागो, सुरत शब्द में नित्त लगाना ।।

अब तुम सोचो, यह नाम मिलना किसको चाहिए :—

विषयों से जो होय उदासा, परमारथ की जामन आसा ।
धन सन्तान प्रीत नहिं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जागे ।।

ये माइयाँ आती हैं—पोता नहीं है ! दोहता नहीं है !! अरे वह तो कहते हैं धन-सन्तान से प्रीत न करो, ये माइयें जो दोहता मांगती है, पोता मांगती हैं, उनके साथ प्रेम करती हैं, यह परमार्थ; इनका तो बाप भी परमार्थ को हासिल नहीं कर सकता, न इनको नाम मिलना चाहिए, न ये नाम के अधिकारी हैं, इसलिए मैं नाम नहीं देता। मैं दुनिया को नाम ही नहीं देता। क्यों नहीं देता ? ये अधिकारी नहीं हैं। तुम ही बताओ, दो, तीन माइयें आई थीं पोता-पोती, दोहता-दोहती ! ठीक है, बहुत अच्छा ! अब वाणा तो यह कहती है :—

विषयों से जो होय उदासा, परमारथ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहिं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जागे॥

तुम बताओ, तुमने नाम लिया, सारी ज़िन्दगी विषय नहीं भोगा ? मेरी बात का जवाब दो फिर बात करो ! सारी ज़िन्दगी नाम लेने के बाद हम तुम सब विषय भोगते हैं, मैं कौनसा बरी हूँ ! मैं भी तो जिस तरह तुम्हारा मुँह काला तुमने किया, इस तरह मैंने भी अपना मुँह काला किया। मगर मैं ते

बच गया, बात मेरी खोपड़ी में समझ में आ गई। बसरे बग़दाद में मैं था, उस वक़्त की मेरी फोटो देखो, तबीयत खिचती है कि नहीं खिचती ? घर में आया, दाता ने कहा औलाद नहीं है औलाद पैदा करो। जो औलाद के लिए मैं औरत के पास जाता तो कोई दु:ख नहीं था मैं तो विषय भोगता रहा। वह जो मेरी शान्ति थी, सब चली गई। वह जो नूर था मेरे चेहरे पर सब ख़त्म हो गया ! समझ नहीं आती थी, क्या हो गया मुझको ! फिर समझ आई, फिर संभला, फिर संभला ! इस वास्ते वे सत्संगी जिनके तीन-तीन, चार-चार बच्चे हैं और औरतें हैं और वे नाम के पीछे पड़े हैं, उनको सोचना चाहिए कि अब इस विषय-विकार को बन्द करो। किसलिए खेह खाते फ़िरते हो ! यही स्वामी जी कहते हैं :—

इन्द्री थान विषय को त्यागो, सुरत शब्द में नित्त लगाना।

यह उन शख़्सों को मैं ज़बाब देना चाहता हूँ जिनकी उमरें गुज़र गईं और वो कहते हैं कि हमें परमार्थ नहीं मिला, भजन नहीं बनता ! भजन बने कै भजन की तो शर्त ही यही है :—

जहाँ काम तहाँ नाम नहीं, जहाँ नाम तहाँ नहीं काम।
रवि रजनी दोनों ना मिलें, एक ठौर एक जाम॥

इस वास्ते नाम जो है हर शख्स को नहीं मिलना चाहिए, नाँहि ! बच्चों के लिए और तालीम, जवानों के लिए और तालीम। मैं यह नहीं कहता तुम गृहस्थ छोड़ो, मगर हर चीज़ का टाईम है। अब बच्चे हो गये तुम्हारे तीन - चार बच्चे हैं, अब कोई ज़रूरत नहीं। फिर क्या करते हो जी ? नसबन्दी करा लो जी, लूप लगालो जी, ताकि जो आगे तो डर के मारे कुछ बचाव होगा भी, डर के मारे कि बच्चा न पैदा हो जाये अपने आप को संभाल के रखोगे, अब बिलकुल बे-फ़िकर हो गये; सुबह से शाम तक जो मर्ज़ी कमाते रहो, फिर तुमको परमार्थ कहाँ से मिलेगा. परमार्थ किस बला का नाम है :—

सार पदारथ गुरु से पाओ, चरन कमल में प्रीत बढ़ाना।

वह कहते हैं सार पदार्थ अर्थात् असलीयत और हक़ीक़त क्या है ? वह सार पदार्थ क्या है इसका मुझे पता नहीं लगता था। दाता ने समझाया, दाता से मुझे सार पदार्थ नहीं मिला ! वो समझाते थे

इशारे में, मैं इशारा समझ नहीं सकता था। यह सार पदार्थ समझाने के लिए मुझे यह काम दिया था। यह सार पदार्थ (ऐ सत्संगियो! तुम लोगों से मुझको मिला, आप लोगों से!) क्या था सार पदार्थ? जब तुम कहते हो कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर अभ्यास में प्रकट होता है, मरते समय ले जाता है और मैं नहीं होता तो मैं सार पदार्थ को ढूँढ़ने के लिए मज़बूर हूँ कि नहीं! जब मेरा रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है, मैं नहीं होता, तो जो कुछ मेरे अन्तर प्रकट होता है वह असल में वह नहीं होता; वह सारा मेरे मन का ख़्याल है, जिस क़िस्म का संस्कार मेरे दिमाग़ में पड़ा हुआ है वही फुरता है। तो फिर अब मैं मन को छोड़ के आगे जाता हूँ आगे केवल प्रकाश और शब्द है। मन के तख़ैयल (ख़्यालात) और मन की शक्लों में न फंसना और अपने आपको मन से ऊपर प्रकाश और शब्द में ले जाना ही सार पदार्थ मेरी समझ में आया है। अगर स्वामी जी का सार पदार्थ कोई और है तो मुझको उसका पता नहीं। वह कहते हैं "सार पदार्थ गुरु से पाओ।" तो मेरा गुरु कौन हुआ जिसने सार पदार्थ

दिया ? ऐ सत्संगियो ! तुम मेरे सच्चे सत्तगुरु हो। तुम्हारे ही चरणों की बदौलत मैं सार पदार्थ सार भेद को पा गया। क्या कोई महात्मा ऐसे वचन कहता है ! क्या कोई ऐसा सन्त है जो निर्भय होके ऐसा भाषण देता है ? मैं देता हूँ क्योंकि मैं सन्त सत्तगुरु वक़्त हूँ। सत्तगुरु कहते हैं सच्चे ज्ञान को। सन्त सत्तगुरु कहते हैं रूहानी सच्चे ज्ञान को। इस वक़्त में जिस चीज़ की ज़रूरत है मैं वह बता रहा हूँ मगर इसके अधिकारी कहाँ हैं ? तुमको भी बताये जाता हूँ बच्चा ! ज़्यादा बिषय में मत फँसना, बताये देता हूँ तुमको ! मेरी तो नौजवान जोड़ों को यही तालीम है कि अच्छी औलाद पैदा करो। जिस क़िस्म के संस्कार लेकर स्त्री पुरुष मिलते हैं वह संस्कार बच्चों में जाता है और वही उसमें फैलता है। जिस तरह आम की गुठली को सौंफ या अजवायन के पानी में डुबा दो। चौबीस घण्टे के बाद उसको बीजो। तो जो उस आम के वृक्ष को फल लगेंगे उनमें सौंफ और अजवायन की सुगन्ध आयेगी। आयेगी कि नहीं आयेगी ? तो यही हालत हमारी है। ऐ माताओ ! ऐ बेटियो ! राष्ट्र के बनाने

वाली, इन्सानी नसल को बनाने वाली तुम हो लीडर राष्ट्र को नहीं बना सकते तुम बना सकतो हो जैसा चाहो अपने बच्चों को। तुम्हारा ख़्याल काम करता है। जिस क़िस्म का ख़्याल लेकर तुमने बच्चे को गर्भ में लिया, जिस क़िस्म के ख़्यालात को लेकर बच्चे को पेट में पाला, जिस क़िस्म के ख़्यालात से तुमने उसको अपना दूध पिलाया, वही संस्कार तुम्हारे बच्चों मैं जायेंगे। मैं चाहता हूँ अगर सौ नहीं तो दो आदमी भी अच्छी औलाद पैदा कर दें तो एक शेर जंगल में आया हुआ वह हज़ारों जानवरों से अच्छा है। समझते हो मेरी बात को मैंने क्या कहा है आप लोगों को ! होश की बात करो !! मैं बेशर्म हो गया हूँ, क्या करूँ मेरे ज़िम्मे ड्यूटी है। मैंने एक लड़का पैदा किया इस ख़्याल से, आज दिन तक मुझे मौक़ा नहीं मिला कि उसे थप्पड़ मारूँ या ओय कहूँ। बाकी औलाद मैंने भी वैसे ही पैदा की जैसे तुमने पैदा की। बाकी औलाद ! जैसी तुमने पैदा की वैसे मैंने पैदा की ! एक लड़का मैंने इस ख़्याल से पैदा किया, मेरी औरत के क्या ख़्याल रहे हों यह मुझे पता नहीं, मैं नहीं जानता। तो इसलिए मैं दुनिया की बातें

भी और परमार्थ की दोनों तुमको बताये जाता हूँ ताकि तुम्हारा कल्याण हो :—

धारा अगम पकड़ सुर्त जोड़ो, इस सत्संग में सदा समाना।

सुनो! अब कोई क्या समझे पढ़ने वाला कि धारा अगम क्या बला है। कोई क्या समझे इस वाणी को कि धारा अगम क्या है? जो मैंने समझी, ऐ मेरे मित्रो! कोई दावा नहीं करता, मैं तुमको बताता हूँ कि मैंने धारा अगम क्या समझी। अगम कहते हैं ज्ञान को। जब से तुम लोगों से पता लगा कि मैं तुम्हारे अन्दर जाता हूँ मैं नहीं होता, समझ गये नां तो जितने ख़्याल त मेरे थे मन के वो तो छूट गये, अब अगम की धारा क्या हो गई? मैं प्रकाश में जाता हूँ, शब्द को सुनता हूँ, वह जो चीज़ मेरे अन्तर रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है वह जो चीज़ है वह अगम है। तो धारा अगम क्या है? ऐ इन्सान! अपने ही आप को, अपने ही रूप को अपने अन्दर में पकड़। जब तक तुम्हारे सामने तुम्हारा गुरु साथ रहेगा, तुम आवागमन के

चक्कर से नहीं बच सकते और न अगम लोक में जा सकते हो, बस फैसला है ! मैं जानता हूँ मैं ऊँचा बोलता हूँ मगर उनके लिए कह रहा हूँ जो सचमुच इस दुनिया से पार जाना चाहते हैं :—

धारा अगम पकड़ सुर्त जोड़ो, इस सत्संग में सदा समाना ।

यह ! किस सत्संग में ? सत्त का संग । सत्त कौन है ? तुम्हारे अन्दर सत्त वह चीज़ है जो शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है, प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है । अपने आप को अपने आप में जोड़ना, यह है असली सत्संग और बाहर में, किसी ऐसे पुरुष का सत्संग करो जो खुद निर्बन्ध हो :—

बन्धे को बन्धा मिले, छूटे कौन उपाय ।
कर सत्संगत निर्बन्ध की, जो पलक ले छुडाय ॥

तुम उन गुरुओं की, संगत करते हो जो आप बंधे हुए हैं । कोई तुमको अपने साथ बांधता है, कोई तुमको डेरे के साथ बांधता है, कोई तुमको मज़हब के साथ बांधता है, कोई तुमको किसी पन्थ के साथ

बांधता है। मैं हूँ निर्बन्ध पुरुष, अभी पूरा हुआ नहीं ! अभी दो तीन प्रतिशत कमी है मुझ में, कोशिश करता रहता हूँ :—

चली सुरत नभ द्वारा झांका।
अण्डा तीन लोक दरसाना ॥

अब तुम देखो ! मैंने कहा था नां, मैं सच कहता हूँ आपको, दाता दयाल का तो एहसान है मगर जो एहसान ऐ सत्संगियो ! तुम लोगों ने मुझ पर किया जिसका तुमको पता नहीं ! उसको मैं सारी ज़िन्दगी भूल नहीं सकता। मैं यह देखना चाहता था कि सन्तमत में क्या बज़ुर्गी है जिसने सारे हिन्दुओं की, मुसलमानों की, जैनियों की सबकी ऐसी-तैसी फेरी। यह मोआमा (भेद) नहीं हल होता था। लिखा था गुरु की सेवा करो। मैंने गुरु की सेवा की। सोने के ताज बनाये (तुमने क्या किया) चाँदी के हुक्के बनाये, मार क्या कुछ नहीं किया ! सब कुछ किया परन्तु समझ में बात नहीं आती थी। यह समझ देने के लिए मुझे यह काम दिया था।

पिछले ज़माने में इस राज़ को जो मैं बता रहा हूँ नहीं खोला। सिर्फ़ किसी अधिकारी चेले को बताया। कबीर ने धर्मदास को बताया और फिर मुँह में गुल्ला ठोंक दिया। क्या कहा ? :—

धर्मदास तोहे लाख दोहाई, सारभेद नहीं बाहर जाई।

बता दिया, कहा बताना नहीं। स्वामी जी ने लिख दिया :—

सन्त बिना कोई भेद न जाने, वह तोहे कहें अलग में।

मैंने उस भेद को खोल दिया। बुरा किया या अच्छा किया इसका मुझे पता नहीं। क्योंकि दाता ने कहा था "फ़क़ीर ! चोला छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना" कोई दावा नहीं करता, मैंने जो ख़ुद अनुभव किया, मेरी समझ में जो आया मैं वह कहता हूँ :—

परे जाय ब्रह्माण्ड समानी। सुन्न सरोवर कँवल खिलाना ॥
अब तो काल कला सब हारा। मान सरोवर बैठ अन्हाना ॥

यह ! काल क्या है ? तुम्हारा मन। जब मन ही छोड़ दिया, संकल्प ही छूट गये तो काल अर्थात्

मन क्या करेगा ! जहाँ मन छूट जाता है, मन संकल्प नहीं करता उस अवस्था का नाम है महासु।

अक्षर रूप निरखती चाली, छोड़ दिया अब देश बिगाना।

अब देखो ! क्षर, अक्षर और नि:अक्षर—क्षर स्थूल माद्दा, अक्षर सूक्ष्म माद्दा। मेरे मन के जितने चक्कर थे, ख़्यालात थे, शक्लें बनती थीं यह अक्षर था इस को छोड़ दिया। यह मेरा देश तो है नहीं, मेरा देश तो उससे परे है। तो वह मुझसे छूटता नहीं था; मैं अक्षर में फँसा हुआ था। ज़िन्दगी का बहुत सारा हिस्सा अक्षर में मैंने बिताया। दाता दयाल का रूप बनता, सामने आता, मार नाचता ! अपने मन के बाहर भी और अन्दर में भी। वह क्या था ? वह अक्षर रूप का खेल था। अब पता लग गया कि यह मेरा घर नहीं था, यह तो मन और माया का चक्कर था :—

सुरत साफ़ उड़ी ऊँचे को। छूट गया सब महल पुराना ॥

जब सुरत इसको छोड़ जाती है तो कहाँ चली जाती है ? मन और शरीर को भूल जाती है :—

आगे चढ़ चढ़ अधर समानी, शब्द शब्द का मर्म पिछाना ।

यह मुझे पता नहीं लगता था । इसका पता मुझे सिर्फ़ आप लोगों की दया से मिला । मैं कोई बात खुशामद की नहीं आप से कहता । मेरे मन्दिर में वे दुःखी आदमी रहते हैं जिनके अन्तर मेरा रूप प्रकट हुआ हुआ है, मैं उनकी सेवा करता हूँ, बस !

संत बिना कोइ समझे नाहीं । आगे जो जो भेद दिखाना ।

यह ! इससे आगे क्या है, कहते हैं सन्त के बिना कोई नहीं समझता और वास्तव में जो कुछ उन्होंने लिखा है वह सन्त बिना कोई नहीं समझता:—

कहने में आवे नहिं पूरा । उलटा मुलटा करत बखाना ।।
बाचक अपनी उक्ति लगावें । अमल बिना नहिं बूझ बुझाना ।

बातें करते रहो; क्या है ! अमल यह है कि अपने अन्तर मन से परे जाओ :—

संतन की गति संतहि जानें । और कहो कैसे पहिचाना ।
अपनी उक्ति चतुरता त्यागो । संत वचन को करो प्रमाना ।।
वह कहते देखी निज अपनी । तू सुन सुन क्यों बुद्धि लड़ाना ।।

मैं जो कुछ कहता हूँ अपना तजुर्बा कहता हूँ ना ! किताबों के हवाले तो नहीं देता ! मेरी समझ में यह आया है :—

राधास्वामी सब से कहते, संत भेद को भेदी जाना।

मैंने जाना। मगर दया दाता दयाल की है, यह आप लोगों की दया से जाना। देखो न ! यहाँ दो आदमी मरे, एक औरत मरी और एक नानकचन्द मरा। अगर मैं नानकचन्द और उस औरत को अपना सत्तगुरु न मानूँ तो किसको मानूँ ? जब तुमने मुझे लिखा कि मेरा रूप उनके अन्दर प्रकट हुआ, मैं तो था नहीं, मेरी आँख खुल गई। तो आप मेरे सत्तगुरु हुए कि ना हुए; तो मैं आगे जाने के लिए मज़बूर हुआ। यह जो राज़ है यह कोई किसी को नहीं बताता, मैंने बता दिया। पता नहीं मैंने अच्छा किया या बुरा किया, मुझे पता नहीं। मैंने मन्दिर की जड़ पर कुल्हाड़ी मारी; अपने मान, अपनी इज्जत, अपनी बजुर्गी पर कुल्हाड़ी मारी; अब इस साफ़ बयानी से कौन मुझे देगा पैसे, कौन मेरी करेगा इज़्ज़त, कौन मुझको बड़ा कहेगा ! नहीं न कह

सकता !! मैंने बड़ी साफ़ बयानी से काम लिया ।

तो मैं यहाँ आया, आप लोग आ गये, आपको मैंने दुनिया की बातें भी बता दीं । बेटियो ! बहनो ! भाइयो ! जुगिन्द्र ! तुम्हारा परिवार ! तुम लोगों ने मुझसे प्रेम किया है। मेरे पास मेरी ज़िन्दगी का तजुर्बा है जो मैं हमेशा जब आता हूँ किन्हीं न किन्हीं लफ़्जों में बयान कर देता हूँ, एक ! दूसरे शुभ भावना है । सच्चे दिल से चाहता हूँ जुगिन्द्र ! तुझको शारीरिक कष्ट न हो । मरने का तो मुझे कोई अफ़सोस नहीं क्योंकि जो आया वह चले जाना है । यह मैं ज़रूर चाहता हूँ कि तुमको जिस्मानी कष्ट न हो, बस ! माली हालत तेरी अच्छी है, बच्चे अच्छे हैं, चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं । आप लोग आ जाते हैं मैं सब का भला चाहता हूँ, विश्वास रखो आपकी मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी । सब को राधास्वामी !

सत्संग परम सन्त हजूर मानव दयाल डा० ईश्वरचन्द्र शर्मा जी महाराज

मानवता मन्दिर होशिआरपुर ।

तिथि 20-2-83

गुरु नाम मिला मुझको प्यारा, राधास्वामी राधास्वामी ।
सब नामों से है यह न्यारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
दलसहस कमल सुमिरन साधा, त्रिकुटी चढ़ ध्यान को आराधा ।
सुन्न महासुन्न दुचिता जारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
सुरत शब्द जोग मत अति है सुगम, कोई अधिकारी पाता है गम ।
गुरु ने मुझे दिया मरम सारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
जगमग जगमग ज्योती दमकी, ज्योती विचित्र घट में चमकी ।
हुआ मगन जो देखा चमकारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
दल सहस कमल घंटा बाजा, और शून्य में रारंग धुन गाजा ।
त्रिकुटी में गरजा ऊँकारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
ब्रह्मांड की थी यह त्रिलोकी, यह त्रिलोकी मैंने छोड़ी ।
चौथे पद सुरत को गारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥

चौथे पद नाम की धुन पाई, प्यारी धुन यह मुझको भाई ।
सुनी उसे भँवर पद से पारा, राधास्वामी, राधास्वामी ।।
सत्तलोक में बीन की गति प्रगटी, निरखी वहाँ सत्तगुरु की भृकुटी ।
सत्तगुरु मेरे हो गये रखवारा, राधास्वामी, राधास्वामी ।।
लख अलख की शोभा बहु न्यारी, अगम की महिमा थी प्यारी ।
ऊँचे चढ़ हो गया भव पारा, राधास्वामी, राधास्वामी ।।
गुरु नाम की धुन पहचान लिया, प्रकाश में रूप को जान लिया ।
मिल गया काल से छुटकारा, राधास्वामी, राधास्वामी ।।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी मैं गाता हूँ ।
मैं तेरा साथ सब को तारा, राधास्वामी, राधास्वामी ।।

●●

गुरुदेव जगद् व्याप्तं ब्रह्माविष्णुशिवात्मकम् ।
गुरोः परतर न हि किञ्चित् तस्मै श्री गुरवे नमः ।।
मस्तरामसुतं देवं फकीरचन्दं पण्डितम् ।
परमसन्तं दयालं च फकीरं वन्दे जगद्गुरुम् ।।

राधास्वामी ! आज मैं थोड़ी देर से इसलिए आया क्योंकि आन्ध्र प्रदेश का लम्बा दौरा करके आया हूँ । यह दौरा भी ज़रूरी था क्योंकि

परम दयाल जी महाराज की आज्ञा थी। उन्होंने मुझे सन् 1981 की वैसाखी पर अमेरिका से बुलाया था। उस वक़्त उन्होंने मुझे लिखा था कि अगर तू जनवरी में आये तो मैं तुझे आन्ध्र प्रदेश में ले जाना चाहता हूँ ताकि वहाँ के लोगों से तुम्हारा परिचय करा दूं। यह तो उन परमतत्त्व अवतार की लीला थी। जब परमतत्त्व मनुष्य के रूप में होते हैं तो मनुष्य का सा ही व्यवहार करते हैं। चूँकि मुझे छुट्टी नहीं मिल सकती थी इसलिए उस वक़्त तो मैं आ न सका। लेकिन अब आन्ध्र प्रदेश गया तो ऐसा लगा जैसे वह खुद ही हर जगह हर सत्संग में मेरे साथ चल रहे हैं। मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कह रहा हूँ, मैं तो गुरु नाम की लहर में बिलकुल बह जाता था। क्योंकि उन्होंने मुझे यह आज्ञा दी है कि तू यह काम करना इसलिए मुझ में यह लहर उस समय बहती है जब मैं सत्संग कराता हूँ। जब वह लहर बहती है, धीरे-धीरे, ज्यों-ज्यों शब्द निकलते हैं, विचार आते हैं, त्यों-त्यों सुरत ऊपर चलती जाती है। ज़बान काम करती जाती है, मन काम कर रहा है, लेकिन मन से परे कोई ताक़त है जिसकी लहर उस बहाव को

तेज करती जाती है। और जैसे नहर या दरिया जब बहाव तेज़ गति से बहुत ज्यादा आता है तो नहर या दरिया का पाट टूट जाता है और लहर ही रह जाती है। इसी तरह उस समय मैं अपने आप को भूलकर लहर का ही रूप हो जाता हूँ। मैं सोचता हूँ आपकी भी यह हालत आयेगी क्या ? वह लहर आपके अन्दर भी बह रही है। आप में भी यह हालत उस समय आयेगी जब आप भी महाराज के कहने के अनुसार अपना जीवन बितायेंगे।

जहाँ-जहाँ मैं गया मैंने महसूस किया कि हर जगह सबका अथाह प्रेम था। कई चीज़ें मुझे वहाँ ऐसी पता लगीं जैसे महाराज जी पहले ही कोई काम तैयार कर गये हैं। बम्बई में एक चीज़ हमें नई पता लगी कि पण्डित पृथ्वीनाथ जी अपनी जेब में दो साल से एक कागज़ छुपाये हुए फिर रहे थे और कहते थे, "मैं उसको बार-बार पढ़ता रहता हूँ।" हमने कहा दिखाओ तो सही भई, क्या कागज़ है ? उन्होंने वह कागज़ दिखाया। मेरे लिए वह कोई नई चीज़ नहीं थी। वह एक चिट्ठी थी जो

परम दयाल जी महाराज ने मुझे लिखी थी लेकिन मुझे यह मालूम नहीं था कि उन्होंने सन् 1981 की वैसाखी के अवसर पर होशियारपुर से निकलने वाली पत्रिका 'जनता जनार्दन' के विशेषांक में भी वह चिट्ठी अपने साथ बैठे हुए मेरी फोटो के साथ छपवा दी थी और लिखा था, "कि मेरे बाद में यह मेरा काम करेंगे। उस चिट्ठी में खैर उन्होंने यह तो कहा कि तू एक उद्देश्य से दुनिया में आया है। तेरी ज़ात-ए-पाक के सामने मैं सिर झुकाता हूँ। और मैं तेरे आने की इन्तज़ार कर रहा हूँ। यह जो सन्तों का काम दाता दयाल जी महाराज का काम, मेरा काम और तुम्हारा काम है, वह तुम्हें करना होगा। दुनिया में चूंकि आजकल के प्रजातन्त्र के तरीक़े के कारण, नफ़रत, ईर्ष्या व बुराइयों के कारण संसार में तबाही तो ज़रूर होगी, कोई इसे रोक नहीं सकता लेकिन उस तबाही के बाद यह जो धर्म है उस वक़्त यह लोगों को बचायेगा। मगर इससे पहले उसके अन्दर उन्होंने यह लिखा कि अब मेरा दुनिया के अन्दर आने का जो उद्देश्य था वह किनारे

पर पहुँच गया है। मैं किसी वक़्त भी जल्दी से जल्दी इस दुनिया से जाने के लिए तैयार हूँ।" कहने का मतलब यह है कि परम दयाल जी महाराज को मालूम था कि वह अगली वैसाखी पर नहीं होंगे। इसलिए उन्होंने उसी वैसाखी पर उस पत्र को छपवा दिया था। अब यह समझ में आ रहा है कि उन्हीं की Current या लहर से यह सब कुछ चल रहा है। यही कारण है कि मैं एक महीने से भी अधिक, जगह-जगह गया। सत्संग के सिलसिले में दो-ढाई या कभी तीन घण्टे सोना होता था। फिर भी उनकी कृपा से सेहत ठीक ही रही सिवाय इसके कि थोड़ा बहुत गला खराब हो गया था। इसी कारण आज मैं देर से आया जिसके लिए मैं आप से क्षमा चाहता हूँ।

आज के पढ़े गये शब्द में गुरु नाम या सत्तनाम की महिमा है। गुरुनाम है परमतत्त्व का। गुरु उस सत्ता का नाम है जो अनादि है, अनन्त है और अनामी है। राधास्वामीमत की ख़ासियत (विशेषता) क्या है? सत्संग, सत्तगुरु और सत्तनाम। सत्संग ज़रूरी

है। सत्संग क्या है ? सत्संग एक स्कूल है जहाँ पर आपको शिक्षा दी जाती है। यह शिक्षा दो क़िस्म की दी जाती है। एक वह शब्द जो सत्तगुरु बोल रहा है और आप सुनते हैं। उस शब्द को सुनने के बाद आप अगर जो उन्होंने कहा उसे पकड़ लें और उस पर अमल करके उसको अपने जीवन में उतार लें अर्थात् उसके अनुसार करनी करें तो ही सत्संग का प्रभाव होता है। एक बात को पकड़ लो, उस पर अमल करो।

शिष्य या सत्संगी कौन है, उसके क्या लक्षण होते हैं ? उसके चार लक्षण हैं :—

काकचेष्टा, बकोध्यानं, श्वाननिद्रा और हंसवृत्ति।

काकचेष्टा :— कौअे जैसी कोशिश। कौआ बड़ा समझदार होता है। वह चेष्टा करता है और कभी हटता नहीं है और लगातार कभी कहीं, कभी कहीं खोज करने चला जाता है। इसी तरह से सत्संगी वह है जो शान्ति की खोज में लगातार चेष्टा अर्थात् हिम्मत और प्रयास करता रहे।

बकोध्यानं :— बक कहते हैं बगुले को। बगुला क्या करता है ? बगुला भक्त बैठा हुआ है मस्ती से। ऐसा लगता है कि बहुत शरीफ़ है। मछली समझती है कि वह ध्यान लगा रहा है। ज्यों मछली आई झट से पकड़ ली। इसका भाव यह है कि जो आप सत्संग सुन रहे हैं, जो बात सत्संग के अन्दर आपके मतलब की आई, जो बात आपको जँची कि यह मेरे पर लागू होती है झट उसे पकड़ लिया।

सत्संगी का तीसरा लक्षण है 'श्वाननिद्रा'। जिसका मतलब है कुत्ते की तरह नींद करना। कुत्ता खटका पाते ही एक क्षण में जाग उठता है। इसीतरह से सत्सगी अगर अज्ञान की निद्रा में सोता हो तो वह ज्ञान का शब्द सुनने से कुत्ते की तरह शीघ्र जाग उठेगा।

सत्संगी का चौथा लक्षण 'हंसवृत्ति' है। हंस में यह गुण होता है कि वह दूध और पानी को अलग कर देता है। अगर हंस को पीने के लिए दूध दिया जाये तो वह दूध की सफ़ेदी पी लेता है और पानी

छोड़ देता है। इसीतरह से सत्संगी को चाहिए कि वह अपने मतलब की बात समझ ले और बिना मतलब की बात को छोड़ दे। इस जगत् में अच्छाई-बुराई; सत्य और झूठ मौजूद हैं। सत्संगी को चाहिए कि वह हंस की तरह अच्छाई को अपना ले और बुराई, को छोड़ दे। सत्य को अपना ले और झूठ को छोड़ दे।

इन चार लक्षणों वाला सत्संगी सच्चा अधिकारी हो जाता है। वही सत्संग से लाभ उठा सकता है। वह ही सत्तगुरु को समझ सकता है और उसी को नाम दान दिया जाता है।

परमतत्त्व का ज्ञान देने वाला गुरु ऐसे सत्संगी के लिए साक्षात् ब्रह्म ही होता है। इस विचार वाला सत्संगी यह समझ लेता है कि गुरु अविनाशी है। वह गुरु की वेष-भूषा या उसके शरीर से सम्बन्ध नहीं रखता क्योंकि चीज़ें असली गुरु नहीं हैं। असली गुरु तो ज्ञान देने वाले गुरु की अविनाशी सत्ता है। इस बात को समझ कर जब सत्संग से

गुरु की तरफ़ ध्यान लग जाता है, तब वृत्ति टिक जाती है। गुरु की किरणें काम करती हैं। बार-बार सत्संग में आने से इन किरणों के द्वारा शिष्य गुरु जैसा बन जाता है। इसलिए ही सन्तमत में सत्संग सत्तगुरु और सत्तनाम की महिमा है।

सत्संग से मन शुद्ध होगा और सत्तगुरु व नाम की सच्ची समझ प्राप्त होगी। सुरत से अन्तर में शब्द की धुन को पकड़ने का नाम राधास्वामी है। सुरत - शब्द योग की कमाई करते हुए आप सहज में ही इन तमाम दर्ज़ों का अनुभव कर सकेंगे जो आज दाता दयाल जी महाराज के शब्द में आये हैं और अन्त में मन को छोड़ कर शब्द में लय होने से अपनी ज़ात, अपने आदि घर या मालिक तक रसाई हासिल कर सकेंगे हैं। सब को राधास्वामी !

—o—

महत् गायत्री मन्त्र का कविताबद्ध रूपान्तर

※

हजूर परम सन्त मानवदयाल
डा० ईश्वरचन्द्र शर्मा जी महाराज

※

हे प्रणव ! तू ब्रह्मा, विष्णु ज्योति का आधार है।
तू है शिव ज्योति, जो भवसागर से करती पार है।।
बिन्दु तीनों ज्योतियों का, केन्द्र शब्द आधार है।
अत: काम और मोक्ष, दोनों का वह ही भण्डार है।।
भू: है तू, पृथ्वी है तू, गणेश की है दिव्यता।
तू भुव: है, मन है और है चन्द्रमा की आत्मा।।
स्व: है तू, और सौरमण्डल का तू प्राणाधार है।
मह: में ज्योति तेरी, सब मण्डलों का सार है।।
जन: ज्योति आकाश गंगाओं से रहती पार है।
तप: शक्ति कोटि ब्रह्माण्डों का सर्वाधार है।।
सत्य स्तर पर तू है सब कुछ, सत्ता है और प्राण है।
तेरी उस अनन्तता से, होता सब का त्राण है।।
तू है सब कुछ आदि, मध्य और अन्त भी तू हे प्रभो।
तेरी आदि ज्योति, सब के पार रहती है विभो।।
हे प्रभो ! उस ज्योतियों की, ज्योति का संचार कर।
सब को सुबुद्धि दे और, सब ही को भव से पार कर।।
यह हमारी प्रार्थना है, तेरे चरणों में सदा।
माया मोह से मुक्त कर दे, देके भक्ति सम्पदा।।

मासिक सन्देश

मेरे प्यारे सत्संगियो,

राधास्वामी, परम दयाल जी सहायी !

वैसाखी का उत्सव गुज़र गया है। परम दयाल जी महाराज इस वार्षिक उत्सव को बहुत महत्त्व देते थे। वह इस अवसर पर सन्तमत के आचार्यों और दूसरे सम्प्रदायों, सनातन धर्म, आर्य-समाज, इस्लाम और जैन धर्म इत्यादि के गुरुओं और आचार्यों को भी सत्संग देने के लिए बुलाया करते थे। 1981 की वैसाखी पर रिचमाण्ड यूनिवर्सिटी, रिचमाण्ड वर्जीनिया, संयुक्त राज्य अमेरिका के धर्मशास्त्र विभाग के प्रोफ़ेसर और ईसाई धर्म की बैप्टिस्ट सम्प्रदाय के पादरी डा० रोडनहाईज़र भी शामिल हुए थे। यह उनका परम दयाल जी महाराज के दर्शन करने का पहला मौक़ा था। उस बार उनका भारत में आने का मक़सद इस देश में रूहानी शान्ति को ढूँढ़ना था। उसी दौरे पर उन्हें भारत की कुछ यूनिवर्सिटियों और धार्मिक संस्थाओं ने भी निमन्त्रण

दिया था। वह परम दयालु जी महाराज के वैसाखी के सत्संगों में सच्चाई पर आधारित रूहानी अनुभवों की अमृतवर्षा से नहाने के बाद, उदयपुर, मद्रास, पाण्डिचेरी, ऋषिकेश, हरिद्वार, बनारस और आखिर में कलकत्ता भी गये। कलकत्ता में उन्हें रामकृष्ण मठ के अधिकारियों की ओर से धर्मशास्त्र के माने हुए प्रोफ़ेसर की हैसियत से, लैक्चर देने के लिए बुलाया गया था। जब वह इस पूरे दौरे के बाद अमेरिका वापिस पहुंचे, तो उन्हें दो बातों का पक्का यक़ीन हो गया। एक तो यह कि उनकी नज़र में भारत में केवल होशियारपुर में मानवता मन्दिर ही ऐसा केन्द्र है, जहाँ पर रूहानी आनन्द और मन की शान्ति मिलती है। दूसरी बात यह है कि परम दयाल जी महाराज ही जीवित सद्गुरुओं में ऐसे सद्गुरु हैं, जिनके दर्शनमात्र से दुःखी जीवों को शान्ति और रूहानियत पर चलने का साहस मिलता है। डाक्टर रोडनहाईज़र परम दयाल जी के इतने नज़दीक आ गये थे कि उन्होंने चोला छोड़ने से पहले डाक्टर रोडनहाईज़र को मानवता धर्म के आचार्य बनाने का इरादा प्रकट किया था। इस समय डाक्टर

राडनहाईज़र अमेरिका के मानवता धर्म के आचार्यों में से एक हैं।

यहाँ पर इन सब बातों को कहने का मतलब यह है कि राधास्वामीमत, जिसका असली स्वरूप मानवता धर्म है किसी को भी अपना धर्म बदलने के लिए राय नहीं देता। वह तो केवल इस सनातन सच्चाई के भेद को खोलता है कि ईश्वर या परमतत्त्व एक है और मनुष्य अपने आप में पूर्ण है। मनुष्य की इस रूहानियत की छुपी हुई ताक़त को निखारने के लिए सभी धर्मों में बताये गये नियम एक जैसे हैं। यदि कोई अन्तर है, तो वह केवल उन नियमों को बयान करने के ढंग में है। उन नियमों में से चार बुनियादी नियम यज्ञ (कुर्बानी), दान, तपस्या और कर्म हैं।

यज्ञ का मक़सद बहुत गहरा है। असल में इसका मतलब मनुष्य में छुपी हुई रूहानियत को निखारने के लिए काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसी खुदगर्ज़ी की इच्छाओं तथा बुराइयों को आहुति (कुर्बानी) देना है। किसी और मौक़े पर मैं यज्ञ के

इस मतलब की व्याख्या पर लेख लिखूंगा। आज तो मैं केवल दान के उस पहलू पर ध्यान दिलाऊंगा, जिसके द्वारा हम अपनी नीयत को साफ़ रख सकते हैं।

दान का मतलब देना है और किसी से भी अपने स्वार्थ के लिए कुछ मांगना, या लेना नहीं है सनातन धर्म से लेकर, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम में दान देने के सद्गुण को बहुत ऊँचा माना गया है। प्रत्येक धर्म ने अपनी-अपनी नज़र से दान की व्याख्या की है। सन्तमत ने इस सद्गुण को रूहानियत के पहलू पर ज़ोर दिया है। धन से लेकर रोटी, कपड़ा, ज्ञान, ताक़त और अहंकार तक को दे देने के भिन्न प्रकार के दान होते हैं। जब साधक अपने अहंकार को भी गुरु को दे देता है, तो उसका फल यह होता है कि उसे गुरु से अभयदान मिल जाता है। सन्तमत और सनातन धर्म के मुताबिक अभयदान सबसे बड़ा दान माना गया है। यह बताने से पहले कि सच्चा गुरु कैसे इस सबसे ऊँचे दान को देता है, इस बात पर रौशनी डालना

ज़रूरी है कि साधारण रूप से दान क्या है और उसका मक़सद क्या है ?

यदि दान के रूहानियत मतलब को अच्छी तरह समझ लिया जाय, तो उसके सम्बन्ध में अन्धविश्वास और रूढ़िवाद पर आधारित दान के ग़लत विचार समाप्त हो जायगे। केवल ऐसी हालत में ही सभी धर्म, जो कि एक ही सच्चाई को पाने के अलग-२ रास्ते हैं, अभयदान के असली मतलब को समझ सकेंगे। सन्तमत में साधक को यह अभयदान, नाम-दान के ज़रिये दिया जाता है।

दान का सीधा-सादा अर्थ है किसी भी वस्तु को दे देना। दूसरे शब्दों में, किसी भी अपनी वस्तु को अपनी इच्छा से, उसके बदले में कुछ भी वापिस न लेने के इरादे से, किसी दूसरे को देना है। आम तौर पर दान को फ़राख़दिली, दूसरों की भलाई और उदारता इत्यादि माना जाता है। इन सभी दृष्टियों से दान का मतलब किसी चीज़ को बिना किसी स्वार्थ के दे देना ही होता है। फिर भी इस सम्बन्ध में

यह ज़रूरी है कि दान देने का मक़सद केवल सच्चे दिल से किसी ज़रूरतमन्द या ग़रीब को मदद देना या ऐसे शुभ काम को बढ़ावा देना होना चाहिए, जो सभी के लिए सुख देने वाला और पुनीत हो।

विश्व के सभी मुख्य धर्मों में दान की तारीफ़ इसलिए की गई है कि दान से मनुष्यमात्र का कल्याण होता है। हमें यह कभी भी नहीं भूलना चाहिए कि पूर्ण गुरु और सन्त मानवमात्र के कल्याण के लिए ही मनुष्य के चोले में आते हैं। वे दुःखी जीवों को परम शान्ति के लिए परमधाम में पहुँचाने की दृष्टि से अपनी स्वाभाविक दया के कारण नामदान देते हैं। महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज ने अपने योग्य शिष्य और उत्तराधिकारी परम सन्त, परम दयाल पण्डित फ़कीर चन्द जी महाराज के नाम पर जो चार पंक्तियाँ लिखी थीं, उन्हें इसी प्रकरण में ही समझना चाहिए :—

तीन ताप से जीव दुःखी है, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥
तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत् में आया, परम दयाल स्नेही॥

यहाँ पर तीन तापों का मतलब शारीरिक रोग, मानसिक दुःख और आत्मा का अज्ञान है। सच्चे धार्मिक जीवन का मतलब वह जीवन है, जिसमें ईश्वर का प्रेम और मनुष्य का प्रेम मुख्य होता है। एक सच्चा धार्मिक मनुष्य वह होता है, जिसे ग़रीबी और दूसरों की कमी को देख कर दुःख होता है। इसलिए ही तो सभी मुख्य धर्मों में यह कहा गया है कि जिस व्यक्ति के पास ज़रूरत से ज़्यादा धन और सम्पत्ति है, उसे दूसरों के दुःख, ग़रीबी और उनकी कमी को दूर करने के लिए दान देना ज़रूरी है। इस्लाम में ज़कात को इस धर्म के पाँच बुनियादी नियमों में से एक माना गया है। यहूदी तथा ईसाई धर्म में सिनागाग (यहूदी मन्दिर) तथा चर्च के सभी सदस्यों के लिए यह ज़रूरी है कि वे अपनी आमदनी का दसवाँ हिस्सा दान में दें। उस सनातन धर्म में, जिसे सबसे पुराना धर्म माना जाता है और जिसका दायरा जैनधर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म, सन्तमत या राधास्वामीमत है, उसमें भी दान देना बहुत ज़रूरी माना गया है। फ़कीर बाबा के मुताबिक यदि कोई व्यक्ति सुख और रूहानियत में तरक़्क़ी चाहता है,

उसे चाहिए कि वह अपनी आमदनी में से कम से कम एक प्रतिशत दान ज़रूर दे। मैंने यह खुद देखा है कि मानव धर्म के इस असूल पर चलने वाले सैकड़ों सत्संगी धनवान और सुखी बन गये हैं।

इस बात को ध्यान में रखना बहुत ज़रूरी है कि सभी धार्मिक परम्पराओं में उस दान की निन्दा की गई है, जो धन, नाम और यश पाने की खुदगर्ज़ी के मक़सद से दिया जाता है। भारत में जितनी भी धार्मिक परम्पराएँ हैं और खासकर भक्तिमार्ग से निकली हुई परम्पराएँ हैं, वे सभी मनुष्य को मुक्ति की तरफ़ ले जाने वाली हैं। उनके मुताबिक मनुष्य का एकमात्र लक्ष्य आत्मा का परमात्मा से, राधा का स्वामी से, जीव का परमतत्त्व से मिल जाना है। असल में, विश्व के सभी मुख्य धर्मों में यही मक़सद छुपा हुआ है। क्योंकि परमतत्त्व पवित्र सत् यानि कि ज़ात-ए-पाक है, इसलिए साधक जो दाम देता है, वह भी पवित्र और पाक होना चाहिए, नहीं तो उसका बुरा प्रभाव पड़ता है।

जो कुछ भी भौतिक जगत् में मौजूद है, वह

प्रकृति के तीन गुणों से बना है। ये गुण सत्त्व, रजस् और तमस् या सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण कहे जाते हैं। सत्त्व पवित्र, प्रकाशमय और हल्का होता है। वह आकाश की ओर ऊपर उठता है और इसलिए वह मनुष्य को ऊपर की तरफ़ ले जाता है। जिस मनुष्य में सत्त्व का असर अधिक होता है, वह प्यार करने वाला और फ़राख़दिल होता है और उसमें नफ़रत, ईर्ष्या, क्रोध और हिंसा नहीं होती। रजस् अथवा रजोगुण को क्रियाशीलता, गति और परिवर्तन माना जाता है। जिस व्यक्ति में रजस् अथवा रजोगुण की ज़्यादती होती है, वह समाज में क्रियाशील होता है और दुनियावी सफलता के लिए लगातार प्रयास करता रहता है और अक्सर बेचैन रहता है। तमस् या तमोगुण को भारीपना, सुस्ती और निकम्मापन माना जाता है। जिस व्यक्ति में तमोगुण प्रधान होता है, वह नशेबाज़ और सुस्त होता है और उन सभी कर्मों का विरोध करता है, जिनसे दूसरों की भलाई हो। सत्त्व से ख़ुशी, आनन्द और ज्ञान मिलता है और इसके द्वारा मनुष्य को रूहानियत और अन्त में जीवन्मुक्ति मिलती है।

★ वन्दनम् ★

चरण शरण की वन्दना, नित कोइ और न काम ।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम ।।
तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूँ आस ।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूँ उदास ।।
रूप ध्याऊँ, नाम गाऊँ, शब्द राता मन ।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन ।।
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय ।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय ।।
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग ।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग ।।

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
15-5-83 को होगा ।

★★★

Regd. No. 2626574 MAY 10th 1983
MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS

To

1283 Sh. A. Hnmanth Rao
H. No. 10-3-194/8 Humayun
Nagar Hydrabad A. P.
Pin—500028

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022

Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)